

डॉ. डेविड डिसिल्वा , नए नियम की सांस्कृतिक दुनिया , सत्र 4, इब्रानियों को पढ़ना, संरक्षण और पारस्परिकता के प्रति सजगता

© 2024 डेविड डिसिल्वा और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड डिसिल्वा द्वारा नए नियम की सांस्कृतिक दुनिया पर दिए गए अपने व्याख्यान में है। यह चौथा सत्र है, इब्रानियों को पढ़ना, संरक्षण और पारस्परिकता के प्रति सजग होना।

इस व्याख्यान में, हम इब्रानियों को लिखे गए पत्र पर बारीकी से नज़र डालेंगे, संरक्षण, मित्रता और पारस्परिकता की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के बारे में पिछले व्याख्यान में हमने जो सीखा था, उसे लागू करेंगे।

इब्रानियों को लिखे तथाकथित पत्र में इन विषयों पर आश्चर्यजनक रूप से बहुत ध्यान दिया गया है। ईश्वर को ईसाई समुदाय के संरक्षक के रूप में प्रस्तुत किया गया है, और निश्चित रूप से, व्यापक रूप से दुनिया के लिए भी। अनुग्रह की भाषा केवल इस पत्र को समाप्त करने के लिए नहीं लगती है।

हम इस बात से परिचित हैं कि, आप सभी पर अनुग्रह हो, यह एक परिचित तरीका है जिससे पॉल और पॉल की टीम के अन्य सदस्य, इब्रानियों के लेखक की तरह, अपने पत्राचार को समाप्त करते हैं। बल्कि, परमेश्वर का अनुग्रह और परमेश्वर का अनुग्रह पूरे तथाकथित पत्र में विषयगत है। मैं तथाकथित पत्र इसलिए कहता हूँ क्योंकि वे वास्तव में एक पत्र से ज़्यादा एक उपदेश की तरह लगते हैं।

सोचिए कि यह कैसे शुरू होता है, इस मण्डली की कृपा और शांति के लिए ऐसा-वैसा नहीं, बल्कि ईसाई विरासत के महानतम प्रचारकों के योग्य एक मधुर शुरुआत के साथ। और यह केवल एक पत्र की तरह समाप्त होता है, लेकिन इसका अधिकांश भाग एक उपदेश की तरह सुना जाता है। यहाँ तक कि लेखक भी इस बारे में बोलता है कि वह क्या कह रहा है और वे क्या सुन रहे हैं, इसके विपरीत वह अंत तक क्या लिख रहा है।

लेकिन परमेश्वर का अनुग्रह पूरे पत्र में उभर कर आता है। यह पुत्र के अवतार और मृत्यु में दिखाया गया है। इब्रानियों 2:9 में, हम पढ़ते हैं कि मसीह ने लोगों को लाभ पहुँचाने की परमेश्वर की इच्छा की अभिव्यक्ति के रूप में परमेश्वर की कृपा से सभी के लिए मृत्यु का स्वाद चखा।

लेखक ने अपनी यात्रा के दौरान ईश्वर की सहायता प्राप्त करने के बारे में बताया है। वह लिखते हैं, तो आइए हम विश्वास के साथ अनुग्रह के सिंहासन के निकट पहुँचें ताकि हमें दया मिले और ज़रूरत के समय मदद के लिए अनुग्रह मिले। ईश्वर के सिंहासन को ही सहायता का स्रोत माना जाता है।

यह वह स्थान है जहाँ जब हमें अपनी यात्रा में दृढ़ रहने के लिए किसी चीज़ की ज़रूरत होती है, तो हम जानते हैं कि कहाँ जाना है, और हम जानते हैं कि हमें वह मदद मिलेगी जिसकी हमें ज़रूरत है। परमेश्वर ने इन शिष्यों को कई उपहार दिए हैं। 6:4-5 में, हम पढ़ते हैं कि उन्होंने एक बार प्रबुद्ध होने के उपहारों का आनंद लिया है, स्वर्गीय उपहार का स्वाद चखा है, पवित्र आत्मा का हिस्सा प्राप्त किया है, परमेश्वर के वचन की भलाई और आने वाले युग की शक्तियों का स्वाद चखा है।

और परमेश्वर के पास विश्वासियों को देने के लिए अभी और भी बहुत कुछ है। लेखक उनसे आग्रह करता है कि वे इस बात का ध्यान रखें कि कोई भी परमेश्वर के उपहार, परमेश्वर की कृपा को पाने से न चूके। पूरे इब्रानियों में, लेखक श्रोताओं के सामने उन उपकारों को रखता है जो परमेश्वर ने भविष्य में उनके लिए रखे हैं।

4:1 में परमेश्वर के विश्राम स्थान में प्रवेश का वादा, 11:16 में स्वर्गीय मातृभूमि का वादा, 13:14 में स्थायी शहर का वादा, 12:28 में अडिग राज्य का वादा, 9:24 में स्वर्ग में प्रवेश करने का वादा, दिव्य क्षेत्र जो दृश्यमान पृथ्वी और दृश्यमान स्वर्ग से परे है, वह दिव्य क्षेत्र जिसमें यीशु पहले से ही शिष्यों की ओर से अग्रदूत के रूप में प्रवेश कर चुका है। और उस स्थान पर, वे इब्रानियों 10.34 के अनुसार, स्थायी क्षेत्र में उनके लिए रखे गए बेहतर और स्थायी संपत्तियों के वादे का आनंद लेंगे। न केवल परमेश्वर को पूरे इब्रानियों में एक परोपकारी या वास्तव में एक व्यक्तिगत संरक्षक के रूप में प्रस्तुत किया गया है, बल्कि यीशु भी हैं। भले ही यीशु का कार्य भी परमेश्वर के अनुग्रह की अभिव्यक्ति था, लेकिन वास्तव में, यह पुत्र ही था जिसने शिष्यों को छुड़ाने और पुनर्स्थापित करने के लिए अपना जीवन दिया।

इसलिए, हम इब्रानियों 2:9 में पढ़ते हैं कि यीशु को मृत्यु की पीड़ा के कारण महिमा और सम्मान का ताज पहनाया गया ताकि परमेश्वर की कृपा से वह सभी के लिए मृत्यु का स्वाद चख सके। और फिर, दूसरी तरफ, धर्मोपदेश के समापन पर, यीशु ने अपने स्वयं के लहू के माध्यम से लोगों को पवित्र करने के लिए गेट के बाहर भी दुख उठाया। शुरुआत से लेकर अंत तक, लेखक श्रोताओं के प्रति यीशु के अनुग्रह की महँगीता को याद करता है।

पुत्र भी शिष्यों की सहायता करना चाहता है। उसे इब्रानियों 2.16-18 में शिष्यों की सहायता करने वाले के रूप में प्रस्तुत किया गया है। पुत्र स्वर्गदूतों की सहायता नहीं करता, बल्कि अब्राहम की संतानों की सहायता करता है। इसलिए, उसे हर मामले में अपने भाइयों के समान बनाया जाना था ताकि वह लोगों के पापों के लिए प्रायश्चित्त करने के लिए परमेश्वर की सेवा में एक दयालु और वफादार महायाजक बन सके।

क्योंकि उसने स्वयं परीक्षा में दुख उठाया है, इसलिए वह उन लोगों की सहायता करने में सक्षम है जो परीक्षा में पड़ रहे हैं। उसके ठीक पहले, हम पढ़ते हैं कि पुत्र ने मृत्यु के भय से और इस भय से उत्पन्न होने वाली दासता से स्वतंत्रता का उपहार दिया है। इसलिए, जब बच्चे मांस और लहू में भागीदार हैं, तो वह आप भी उन्हीं चीज़ों में भागीदार हुआ ताकि मृत्यु के द्वारा वह उसे नष्ट कर सके जिसके पास मृत्यु की शक्ति है, अर्थात् शैतान, और उन सभी को छुड़ाए जो मृत्यु के भय से आजीवन दासता के अधीन थे।

इन कई तरीकों से, लेखक यीशु को एक परोपकारी के रूप में प्रस्तुत करता है जिसने खुद को सबसे अधिक दिया है और महान उपहार प्राप्त किए हैं, श्रोताओं को महान उपहार प्रदान किए हैं। लेकिन, यह यीशु की मध्यस्थता है जो इब्रानियों के लेखक का सबसे अधिक ध्यान आकर्षित करती है। उन्हें, अधिकांश भाग के लिए, एक सहानुभूतिपूर्ण, महान उच्च पुजारी के रूप में प्रस्तुत किया जाता है जो विश्वासियों के लिए पिता परमेश्वर से समय पर सहायता सुनिश्चित करता है।

उदाहरण के लिए, 4:14-16 में हम पढ़ते हैं, " क्योंकि हमारा एक बड़ा महायाजक है जो स्वर्ग से होकर गया है, अर्थात् परमेश्वर का पुत्र यीशु। हम अपने अंगीकार को दृढ़ रखें, क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके, परन्तु वह सब बातों में हमारी नाई परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला। तो आइए हम हियाव बान्धकर अनुग्रह के सिंहासन के निकट चलें, कि हम पर दया हो, और आवश्यकता के समय सहायता करने के लिये अनुग्रह पाएं।"

इसलिए, इस अंश में, लेखक यीशु को केवल एक मध्यस्थ के रूप में ही नहीं, बल्कि पुल बनाने वाले के रूप में भी याद करते हैं, न केवल ईश्वर और मानवता के बीच मध्यस्थ के रूप में, बल्कि एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जो वास्तव में समझता है, एक ओर, मानव होना क्या है और एक मानव के रूप में किस तरह के संघर्ष और चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, और साथ ही, वह जानता है कि ईश्वर का पाप रहित पुत्र होना क्या है, और इसलिए वह ईश्वर से अनुग्रह प्राप्त करने के लिए किसी से भी बेहतर स्थान है, क्योंकि वह हमारी ओर से ईश्वर की दृष्टि में बेदाग और पूरी तरह से सुंदर है। इसलिए लेखक यह भी दावा करता है कि यीशु उन लोगों को पूरी तरह से बचाने में सक्षम है जो उसके माध्यम से ईश्वर के निकट आते हैं, क्योंकि वह हमेशा उनके लिए मध्यस्थता करने के लिए रहता है। लेखक अध्याय 7:1 से 10:25 तक विस्तार से विचार करेगा कि कैसे यीशु मानव और ईश्वर के बीच मध्यस्थता करता है, टूटे हुए रिश्ते को ठीक करता है और मनुष्यों को न्याय और क्रोध की अपेक्षा के बजाय ईश्वरीय अनुग्रह की अपेक्षा में ईश्वर के सामने खड़ा होने देता है।

यदि आप इस दृष्टिकोण से उन अध्यायों को नए सिरे से पढ़ेंगे, तो आप देखेंगे कि इब्रानियों में इस पुल निर्माता, यीशु, इस पॉटिफ़ेक्स, इस महान महायाजक के कार्य के बारे में सोचने से कितना अधिक संबंध है। लेखक विश्वासियों के यीशु और पिता परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता के दायित्व पर समान ध्यान देता है, और लेखक विश्वासियों को उस प्रेरणा को खोजने में मदद करने पर ध्यान देता है जिसकी उन्हें कृतज्ञता से परमेश्वर को जवाब देने के लिए आवश्यकता है, न कि उन चुनौतियों का जवाब देने पर जो उन्हें इस समय घेरती हैं। जैसा कि हमने अपने तीसरे व्याख्यान में देखा है, हमारे प्राचीन पाठक एक उपयुक्त प्रतिक्रिया के लिए लेखक के आह्वान को अच्छी तरह से समझेंगे।

हम इसके एक उदाहरण के लिए इब्रानियों 12.28 को देख सकते हैं, हालाँकि ऐसे कई उदाहरण हैं। हम देखते हैं कि लेखक परमेश्वर द्वारा लाभान्वित होने के तथ्य को कुछ कार्य करने के आह्वान के आधार के रूप में देखेगा। चूँकि हम एक अडिग राज्य प्राप्त कर रहे हैं, इसलिए आइए हम

कृतज्ञता दिखाएँ जिसके माध्यम से हम श्रद्धा और ईश्वरीय भय के साथ परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले तरीके से उसकी सेवा करेंगे।

दरअसल, वहाँ ग्रीक *echomen* है खारेन , हमें अनुग्रह प्राप्त हो, एक ऐसा तरीका है जिसका कोई लकड़ी जैसा अनुवाद कर सकता है, लेकिन इस संदर्भ में, इस तथ्य की ओर इशारा करने का संदर्भ कि हमें एक महान उपहार मिल रहा है, खारेस का अर्थ अनुग्रह दिखाने का दूसरा पहलू होना चाहिए, यह इस संदर्भ में धन्यवाद लौटाना है। चूँकि हम एक अडिग राज्य का यह अविश्वसनीय उपहार प्राप्त कर रहे हैं, इसलिए हमें कृतज्ञता दिखानी चाहिए। और वह कृतज्ञता वह तरीका है जिससे हम ईश्वर को एक अच्छी तरह से प्रसन्न करने वाली सेवा प्रदान करेंगे।

इसके अलावा, 10:19 और उसके बाद, लेखक कहता है, चूँकि हमारे पास यीशु के लहू के द्वारा पवित्र स्थानों में प्रवेश करने का साहस है, चूँकि हमारे पास यह विशेषाधिकार है, मानवता के साथ परमेश्वर के व्यवहार के इतिहास में यह अभूतपूर्व विशेषाधिकार है, तो आइए हम प्रतिक्रिया में कुछ करें, आइए हम करीब आएँ, आइए हम उस उपहार का लाभ उठाएँ जो हमें दिया गया है, और आइए हम बिना किसी हिचकिचाहट के अपने स्वीकारोक्ति को दृढ़ता से थामे रहें, क्योंकि जिसने वादा किया है वह विश्वासयोग्य है। इसलिए, लेखक फिर से पहचानने योग्य पारस्परिकता स्क्रिप्ट का आह्वान कर रहा है। हमें यह महान उपहार दिया गया है; इसका लाभ न उठाना, परमेश्वर के करीब आने में विफल होना, उदाहरण के लिए, अपने पड़ोसियों से डरने के कारण लकड़ी के काम में बह जाना पाप है, और आइए हम इसके मूल्य के कारण इसे दृढ़ता से थामे रहें, आइए हम अपने स्वीकारोक्ति, इस परमेश्वर और उसके लाभों के प्रति अपनी गवाही को दृढ़ता से थामे रहें।

अब, लेखक उन अभिभाषकों को संबोधित कर रहा है जो इस चुनौती का सामना कर रहे हैं कि यीशु और जिस परमेश्वर का वह प्रतिनिधित्व करता है, उसके साथ अनुग्रह के इस रिश्ते को जारी रखना है या नहीं। अभिभाषक की स्थिति 1 पत्रस में सामना की गई स्थिति के समान प्रतीत होती है। इसलिए, लेखक ने परमेश्वर द्वारा उपहार दिए जाने, परमेश्वर द्वारा अनुग्रहित किए जाने और यीशु जैसे मध्यस्थ की मध्यस्थता का आनंद लेने के श्रोताओं के अनुभवों के बारे में जो कुछ भी कहा है, वह श्रोताओं के सामने आने वाली चुनौतियों को तैयार करने का एक हिस्सा है ताकि वे इन चुनौतियों के बीच एक वफादार प्रतिक्रिया दें।

हम श्रोताओं के बारे में कुछ बातें जानते हैं, ज़्यादा नहीं, लेकिन उपदेश से कुछ बातें जानते हैं। हम जानते हैं कि वे सुसमाचार की घोषणा सुनने और पवित्र आत्मा की अभिव्यक्तियों में सुसमाचार के संदेश की परमेश्वर की पुष्टि का अनुभव करने के परिणामस्वरूप परिवर्तित हुए थे। हम पाते हैं कि अध्याय 2, पद 3 से 4 में, और वास्तव में, लेखक ने हमें जो चित्र दिया है, वह उस चित्र से बहुत मिलता-जुलता है जो पौलुस ने गलातियों 3:2 से 5 और 1 कुरिन्थियों 2:1 से 5 में अपने मिशन के बारे में दिया है, जो कि सिर्फ़ एक और तरह का संबंध है, या यह सोचने का एक और कारण है कि इब्रानियों के लिए यह उपदेश पौलुस की टीम के एक सदस्य से आता है, और उसी तरह के अनुभव को देखता है जो पौलुस के मिशन के धर्मांतरित लोगों को हुआ था।

हम जानते हैं कि उन्हें अपने पिछले जीवन और धर्म परिवर्तन के अपने निर्णय के बारे में सोचने के एक नए तरीके से समाजीकृत किया गया था, और ईश्वर के न्याय के युगांतशास्त्रीय ढांचे को संकट के रूप में तैयार करने और बचने के लिए सबसे अच्छा माना गया था। 6:1 से 2 में, हम उन विषयों की एक तरह की धर्मशिक्षा पाते हैं जो उनके मूलभूत प्रशिक्षण का हिस्सा थे: मृत कर्मों से पश्चाताप, ईश्वर के प्रति विश्वास, शाश्वत न्याय, और इसी तरह। और हम यह भी जानते हैं कि अतीत में किसी समय, उन्होंने अपने गैर-ईसाई पड़ोसियों की अस्वीकृति और शत्रुता का तीव्र अनुभव किया था।

और यहाँ, मैं अध्याय 10, श्लोक 32 से 34 तक का एक पाठ पढ़ूँगा, जहाँ लेखक इन पिछले अनुभवों को याद करता है। उन शुरुआती दिनों को याद करें जब आपको ज्ञान प्राप्त होने के बाद, आपने कष्टों के साथ एक कठिन संघर्ष सहा था। आपको सार्वजनिक रूप से निन्दा और कष्टों का सामना करना पड़ा था।

आप भी उन लोगों के भागीदार बन गए, जिनके साथ ऐसा व्यवहार किया जा रहा था। क्योंकि आपने कैदियों के प्रति सहानुभूति दिखाई, और आपने अपनी संपत्ति जब्त होने पर खुशी-खुशी स्वीकार किया, क्योंकि आपको पता था कि आपके पास बेहतर और स्थायी संपत्ति है। जैसा कि हमने पहले और दूसरे व्याख्यान में एक साथ पता लगाया, अपमान और शर्मिंदगी का सार्वजनिक आरोपण, सामाजिक नियंत्रण का प्रयोग करने की एक प्रमुख रणनीति थी।

इस समुदाय के आस-पास के बड़े समाज के सदस्य, जो अपने बीच बड़े हो रहे थे, अपने बीच में जो कुछ भी गलत ज्ञान और गलत व्यवहार के रूप में देखते थे, उसे सुधारने का प्रयास कर रहे थे। और, ज़ाहिर है, दूसरों को इस गलत समूह में शामिल होने से रोकना चाहते थे। पूरे धर्मोपदेश में दर्शाई गई चुनौती सामाजिक दबाव के सामने ईश्वर को छोड़ देने से संबंधित है।

10:24 और 25 में, हम पाते हैं कि इस समुदाय या इन समुदायों के कुछ सदस्यों ने पहले ही एक साथ इकट्ठा होना छोड़ दिया है। लेखक का मानना है कि इन सामाजिक दबावों के कारण और इस संस्कृति के हाशिए पर पड़े, मूल्यहीन सदस्यों, इस शहर के निवासियों के रूप में अब भी जीने की कीमत के कारण दूर चले जाने का खतरा मौजूद है। इन चुनौतियों के कारण, समुदाय में हर किसी के सामने यह खतरा है कि वे अपने धर्म परिवर्तन के समय सुने गए संदेश से दूर चले जाएँ, यीशु द्वारा बोले गए और ईश्वर द्वारा प्रमाणित संदेश की उपेक्षा करें।

ये सभी विशिष्ट धर्मशास्त्र पाठों में पाए जाते हैं, उदाहरण के लिए, 2:1 और 2:3 से 4 में। जीवित परमेश्वर पर भरोसा करने में विफल होने का खतरा है, जो कि अध्याय 3, पद 12 से 13 में अविश्वास के माध्यम से जीवित परमेश्वर से दूर हो जाने का खतरा है। लेखक सुझाव देता है कि अध्याय 4, पद 1 में विश्राम के वादा किए गए स्थान में प्रवेश पाने में विफल होने की विफलता है। 4:12 में भरोसे की विफलता के कारण जिस तरह से जंगल की पीढ़ी वादा किए गए देश से चूक गई थी, उसी तरह से कमी रह जाने का खतरा है। फिर से, धर्मोपदेश के अंत में, लेखक थक जाने या हिम्मत हारने या फिर से, 12:3 और 12:15 में परमेश्वर के उपहार को प्राप्त करने से चूक जाने के खतरे के बारे में बात करता है। संभवतः इब्रानियों के सबसे प्रसिद्ध चेतावनी वाले अंश, इब्रानियों 6:4 से 8 में, दृढ़ता और एक दूसरे में निरंतर निवेश के माध्यम से परमेश्वर के लिए फल

लाने में विफल होने का खतरा है। यदि यह सच है कि एक प्राचीन दस्तावेज़ में बार-बार जोर देने से हमें पता चलता है कि वास्तव में समस्या का मूल क्या है, तो हम देखते हैं कि इब्रानियों में व्यापक जोर दृढ़ता के प्रश्न पर है।

क्या ये शिष्य प्रतिबद्धता में लड़खड़ाहट के आगे झुक जाएँगे, या वे उसी दिशा में आगे बढ़ना जारी रखेंगे जिस दिशा में वे तब आगे बढ़े थे जब वे पहली बार ईसाई आंदोलन में शामिल हुए थे, उसी आत्मविश्वासपूर्ण साहस के साथ जो उन्होंने पहले दिखाया था जब उनके पड़ोसियों ने उन्हें सबसे भयंकर तरीकों से अस्वीकार कर दिया था, जो उन्होंने अनुभव किया था? जैसे-जैसे इन चर्चों या इस विशेष मण्डली में कुछ व्यक्ति पुरस्कार की तुलना में कीमत के बारे में अधिक जागरूक होते गए, वे ईसाई समुदाय के साथ खुले तौर पर जुड़ने से दूर होने लगे। यह 10:24 , और 25 में परिलक्षित होता है। गैर-ईसाई पड़ोसियों के लिए, इस तरह की वापसी एक अच्छी बात के रूप में देखी जाएगी, सुधार की ओर एक कदम के रूप में जिसे उनके पड़ोसी जल्दी से पुष्टि करेंगे।

शर्म से बाहर निकलने का एक रास्ता है। इन स्थितियों में अपमान से बाहर निकलने का एक रास्ता है। अब, लेखक को शायद प्रत्यक्ष रूप से पता नहीं है कि प्रतिबद्धता में यह कमी कितनी व्यापक या कितनी गहरी है, लेकिन वह बहुत कम लोगों की गतिविधियों में चेतावनी के संकेत देखता है, साथ ही उस उत्साह की कमी में भी चेतावनी के संकेत देखता है जिसके साथ समुदाय कुछ लोगों के पीछे गया या कुछ लोगों को दलबदल करने और मेजबान समाज की गोद में लौटने से रोकने की कोशिश की।

इसलिए, लेखक की रणनीति, उसकी पादरी रणनीति, श्रोताओं को इस बात पर ध्यान केंद्रित करना है कि उन्हें पहले से ही ईश्वर से क्या मिला है, उन्हें क्या लाभ हुआ है, और यीशु में उनके पास क्या है ताकि कृतज्ञता और प्रतिबद्धता जागृत हो, कृतज्ञतापूर्वक प्रतिक्रिया करते रहें, और इतने उदार, लेकिन इतने शक्तिशाली, परोपकारी के प्रति कृतघ्नता दिखाने का डर पैदा करें। इसलिए, आइए हम इब्रानियों के बारे में एक साथ मिलकर सोचें, जो आभारी प्रतिक्रिया के लिए एक आह्वान है और अपार उपकार के लिए उचित आभार प्रकट करता है। लेखक इस पूरे उपदेश में श्रोताओं से आह्वान करता है कि वे अपने संरक्षक को सम्मान दिलाना जारी रखें, जो उन्होंने ईश्वर से प्राप्त किया है, जो वे अभी भी ईश्वर से प्राप्त करने की आशा करते हैं, और इस प्रकार यीशु मसीह के माध्यम से ईश्वर के साथ अपने संबंध की गवाही देते हैं।

10:19 से 23 में, एक बार फिर, हम पढ़ते हैं, चूँकि हमें यीशु के लहू के द्वारा पवित्र स्थानों में प्रवेश करने का साहस है, इसलिए हमें बिना किसी हिचकिचाहट के अपनी आशा के अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहना चाहिए क्योंकि जिसने वादा किया है वह विश्वासयोग्य है। अगले ही श्लोक में, वह कहता है, एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें, जैसा कि कुछ लोगों की आदत है। इसलिए, इस अंश में, लेखक श्रोताओं को गवाही देते रहने के लिए बुला रहा है, और इस प्रकार अपने दिव्य संरक्षक को सम्मान दिलाते हुए खुद को उस संरक्षक से संबंधित होने के लिए खुले तौर पर दिखा रहा है, और पुत्र, यीशु मसीह के माध्यम से उस दिव्य संरक्षक के साथ उस संबंध से शर्मिंदा नहीं है।

इस रिश्ते को लेकर शर्मिंदगी महसूस करने का एक सामाजिक कारण भी है। इसकी वजह से उन्हें अपने पड़ोसियों की नज़रों में सम्मान खोना पड़ा है। इसकी वजह से उन्हें अपने शहर और अपने समुदाय में अपनी प्रतिष्ठा खोनी पड़ी है।

लेकिन, लेखक कहते हैं कि महंगे उपहारों के लिए महंगी कृतज्ञता और महंगी वफ़ादारी की ज़रूरत होती है। इसके तुरंत बाद, वह कहते हैं, पुराने दिनों को याद करते हुए, उस साहस को याद करते हुए जो आपने तब दिखाया था जब आपके आस-पास का समाज आप पर टूट पड़ा, आपको शर्मिंदा किया, आपका अपमान किया, आपको फटकार लगाई, आपने हार नहीं मानी। और साहस की सीमा यह थी: भले ही आप खुद अपने पड़ोसियों द्वारा लक्षित न किए गए हों, फिर भी आपने उन ईसाइयों के साथ एकजुटता दिखाने के लिए अपनी राह से हटकर काम किया जिन्हें लक्षित किया गया था।

तो, आपने खुद ही अपनी पीठ पर निशाना साधा। आप यीशु पर इतने आश्वस्त थे कि जब आपके ईसाई मित्रों को कारावास की सजा दी गई, संभवतः किसी तरह के दिखावटी आरोपों के कारण, तो प्राचीन दुनिया में समूह घृणा द्वारा कानूनी व्यवस्था को काफी हद तक हेरफेर किया जा सकता था। आपने पीछे नहीं हटे ताकि आप पर हमला न हो। आप उनके पास गए, और आपने उनकी मदद, सहायता, भोजन, साथ और प्रोत्साहन लिया और इस तरह अपनी पीठ पर भी निशाना साधा।

इसलिए, लेखक कहते हैं, अपनी हिम्मत को मत छोड़ो, क्योंकि इससे बहुत बड़ा इनाम मिलता है। यहाँ साहस, ग्रीक में, पारूसिया, अपने मन की बात कहने, अपने विश्वासों पर अडिग रहने और उन्हें आवाज़ देने के लिए एक पहचाना जाने वाला शब्द है। पारूसिया ग्रीक लोकतंत्र में एक गुण था।

लोकतंत्र में स्वतंत्र लोगों ने यही किया। और यही बहादुर लोगों ने अत्याचार का सामना करते हुए किया जिसने प्रतिरोध या वैकल्पिक विचारों को दबाने की कोशिश की। और इसलिए, लेखक कह रहा है, अपने कार्यों के माध्यम से, अपने साथी ईसाइयों के साथ अपने संबंधों के माध्यम से, अपने आस-पास के गैर-ईसाइयों के अत्याचार से डरने से इनकार करने के माध्यम से उस तरह का पारूसिया दिखाते रहें।

और वह 1315 में उपदेश के अंत में लिखते हैं, यीशु मसीह के माध्यम से, आइए हम परमेश्वर को स्तुति का बलिदान चढ़ाते रहें, अर्थात्, उन होठों का फल जो परमेश्वर के नाम का प्रचार करते हैं। यहाँ, वह एक तरह की प्रतिक्रिया, एक तरह के प्रतिफल के बारे में बात कर रहे हैं जो ईश्वरीय कृपा का प्राप्तकर्ता उस ईश्वर को दे सकता है जिसे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है। हम कम से कम लोगों को यह तो बता ही सकते हैं कि परमेश्वर ने हमें क्या दिया है।

हम इस ईश्वर की अच्छाई का गुणगान करते रह सकते हैं, भले ही इसके लिए हमें बहुत कीमत चुकानी पड़े। तो चलिए हम ऐसा करते रहें, लेखक कहते हैं। कृतज्ञता और जुड़ाव का यह गुणगान ईसाई सभा के साथ सार्वजनिक रूप से इकट्ठा होने का रूप लेता है, यानी यीशु मसीह में ईश्वर के ग्राहकों के समूह के साथ।

और हम पहले ही उस आयत को एक साथ देख चुके हैं। लेखक यीशु के प्रति निरंतर वफ़ादारी का आह्वान कर रहा है, भले ही वह वफ़ादारी बेशक महंगी हो। हमने देखा कि सेनेका ने पारस्परिकता के लोकाचार के हिस्से के रूप में इसके बारे में बात की थी।

मैं अपने संरक्षक या अपने मित्र के प्रति सच्चा रहूँगा, तब भी जब यह मुझे सामाजिक शर्मिंदगी या हाशिए पर ले जाए। इब्रानियों के लेखक ने ठीक यही बात कही है। यीशु ने लोगों को अपने खून के माध्यम से पवित्र करने के लिए द्वार के बाहर कष्ट सहे।

इसलिए, आइए हम छावनी से बाहर उसके पास जाएं, और उसके द्वारा सहे गए अपमान को अपने साथ लेकर चलें। इस कृतज्ञता के बदले में हमें अपने बेटे के प्रति क्या करना चाहिए, जिसने न केवल हमारे लिए अपना जीवन दिया, बल्कि अपने जीवन को इस तरह से दिया कि उसने समाज की नज़रों में अपना सारा सम्मान भी खो दिया? हमें भी उसके प्रति ऐसा ही करना चाहिए, और हम उसे वही वापस देते हैं। यही वह वफ़ादारी है जिसके लिए हम ऋणी हैं।

इसलिए, अगर यीशु के प्रति हमारी वफ़ादारी का मतलब है कि अब हम शिविर से बाहर हैं, हमें सामाजिक रूप से हमारे पुराने नेटवर्क और हमारे शहर से बाहर निकाल दिया गया है, तो यह यीशु को वापस देने का एक हिस्सा है जैसा कि उसने हमें दिया है। यह बहुत बड़ी कीमत नहीं है। यह वह है जो हमें उसके लिए देना है।

यह एक सीधा-सादा पारस्परिकता वाला लिपि है। यही बात इब्रानियों के दूसरे अंश, इब्रानियों 12, तीन से चार में भी लागू हो सकती है, जहाँ लेखक लिखता है, उस पर विचार करें, यीशु, जिसने पापियों से अपने विरुद्ध इतनी शत्रुता सहन की ताकि तुम थक न जाओ या हिम्मत हार न जाओ। पाप के विरुद्ध अपने संघर्ष में, तुमने अभी तक अपना खून बहाने की हद तक प्रतिरोध नहीं किया है।

अंतर्निहित तर्क यह हो सकता है कि आप सोचें कि यीशु ने आपके लिए क्या-क्या सहा। आपने उसके लिए वहाँ जाना शुरू नहीं किया है। वह आपके लिए क्रूस पर चढ़ाया गया था।

तुम्हारे लिए उसे सबसे बड़ी बेइज्जती झेलनी पड़ी। तुमने अभी तक उसके लिए खून की एक बूँद भी नहीं बहाई है। इसलिए उसे छोड़ने के बारे में सोचना भी मत।

यह शर्मनाक होगा। ऐसा करना आपके संरक्षक के प्रति आपके दायित्व को पूरी तरह से पूरा करने में विफल होना होगा। लेखक एक विश्वसनीय परोपकारी पर निरंतर भरोसा करने का भी आग्रह करता है।

यदि ईसाई अब भाग जाते हैं, तो वे वास्तव में वही कह रहे होंगे जो परमेश्वर ने वादा किया है: परमेश्वर या तो उद्धार नहीं करेगा या फिर उससे चिपके रहने के लायक नहीं है। मैं अपने गैर-ईसाई पड़ोसियों की दोस्ती को प्राथमिकता दूँगा। लेखक इब्रानियों को इसके विपरीत कहते हैं, कि वे परमेश्वर पर भरोसा करते रहें, भले ही भविष्य के लिए वादा किए गए लाभों तक पहुँचने में कुछ समय लग रहा हो।

इसलिए, वह 3:12 में लिखते हैं, हे भाइयो और बहनो, सावधान रहो, कहीं ऐसा न हो कि तुम में से किसी के मन में दुष्टता और अविश्वास हो, जो जीवते परमेश्वर से दूर हो जाए। क्योंकि तुमने ऐसा नहीं किया, इसलिए तुम परमेश्वर की उस क्षमता पर भरोसा नहीं कर पाए कि वह तुम्हें उन लाभों के अच्छे वादे तक पहुँचा सकता है, जो उसने तुम्हारे लिए रखे हैं। और 6:12 में, वह आग्रह करता है, सुस्त मत बनो, बल्कि उन लोगों की नकल करो, जो धैर्यपूर्वक भरोसे के ज़रिए परमेश्वर द्वारा दिए गए वादे को प्राप्त करते हैं।

पूरे उपदेश में ये निर्देश दिए गए हैं कि भरोसा करते रहें, शांति दिखाते रहें और उस परमेश्वर पर भरोसा रखें जिसने उभरने का वादा किया है। उदाहरण के लिए, 1023 में, आइए हम बिना डगमगाए अपनी आशा के वचन को दृढ़ता से थामे रहें। क्यों? क्योंकि जिसने वादा किया है वह विश्वसनीय है।

और अध्याय 10 में थोड़ा आगे, हम उन लोगों की संगति में से नहीं हैं जो विनाश की ओर पीछे हटते हैं, बल्कि हम उन लोगों की संगति में से हैं जो अपनी आत्माओं की सुरक्षा के लिए भरोसा करते हैं। यह फिर इब्रानियों में विश्वास पर प्रसिद्ध अध्याय, इब्रानियों 11 की ओर ले जाता है, जो इस बारे में बात करता है कि परमेश्वर के वादे पर भरोसा करने वाले लोग इस दुनिया में कैसे काम करते हैं, और जो अनिवार्य रूप से अनन्त प्रशंसा और प्रसिद्धि, सम्मान की गवाही भी देता है, जो ऐसे लोगों को मिला, है न? हम उस अध्याय में केवल अब्राहम और मूसा और विश्वास के अन्य नायकों के बारे में बात करते हैं क्योंकि उन्होंने परमेश्वर पर भरोसा किया और जब उन्हें लगा कि उन्हें कुछ समय के लिए निम्न स्थिति को अपनाना है, तो उन्होंने परमेश्वर पर भरोसा करना नहीं छोड़ा, जैसे अब्राहम एक प्रवासी बन गया जब वह कसदियों के ऊर में पूरी तरह से घर जैसा महसूस कर रहा था और वहाँ एक स्थापित जीवन जी रहा था।

या मूसा, जो परमेश्वर के लोगों के साथ दुर्व्यवहार में हिस्सा लेने के लिए फिरौन के महल से चला गया। यहाँ तक कि प्रसिद्ध कहावत, मेरा मतलब है, जब मैं बड़ा हो रहा था, इब्रानियों से एकमात्र श्लोक, अच्छा, इब्रानियों से दो श्लोक मैंने याद किए, है न? इब्रानियों 11, 1, और फिर यह, यीशु मसीह कल, आज, और हमेशा, या अनंत काल तक एक ही है। यहाँ तक कि वह कथन, वह प्रसिद्ध श्लोक, विश्वास और भरोसेमंदता के बारे में एक कथन है।

यह वास्तव में ईश्वर के पुत्र की अनंतता के बारे में नहीं है। यह इस तथ्य के बारे में है कि आप यीशु पर भरोसा कर सकते हैं कि वह कल वही करेगा जो उसने कल वादा किया था। डियो क्रिसोस्टॉम, जो एक वक्ता और राजनेता थे, और अपने निर्वासन के बाद, एक दार्शनिक, जिनकी मृत्यु संभवतः 120 ई. के आसपास हुई, अगर याददाश्त सही है, तो उन्होंने लिखा कि हमें लोगों पर भरोसा करने में परेशानी इसलिए होती है क्योंकि हम कभी नहीं जानते कि कोई व्यक्ति कल भी वैसा ही साबित होगा जैसा वह आज था।

उस माहौल में, यीशु के बारे में यह कथन यीशु पर भरोसा करने में सक्षम होने के बारे में एक कथन है। हम जानते हैं कि वह आज भी वैसा ही है जैसा वह कल था, और वह हमेशा वैसा ही रहेगा। उसने जो वादा किया है, उसका चरित्र क्या है, और वह हमारे लिए क्या करेगा और हमारे लिए क्या करने की इच्छा रखता है, वह कभी नहीं बदलेगा।

यही वह आधार है जिस पर हम निर्माण करते रह सकते हैं। इसलिए, ये सभी आयतें निरंतर भरोसा करने और इसलिए, ईश्वरीय संरक्षक और मध्यस्थ, मध्यस्थ, यीशु के प्रति वफादार बने रहने के बारे में हैं। लेखक श्रोताओं से यह भी आग्रह करता है कि वे ईश्वर और मसीह को वह सेवा अर्पित करते रहें जो उन्हें मिलनी चाहिए।

फिर से, सामाजिक रूप से निम्न ग्राहक और सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक रूप से श्रेष्ठ संरक्षक के मामले में, ग्राहक वास्तव में किसी उपकार का बदला नहीं चुका सकता है, लेकिन ग्राहक संरक्षक के लिए ऐसी चीजें कर सकता है जो कभी भी दिए गए उपहार से मेल नहीं खाएगी, लेकिन कम से कम पारस्परिक उपकार की भावना से मेल खाएगी जो मौजूद होनी चाहिए, दूसरे के हितों को आगे बढ़ाने की कोशिश करने की भावना जो इस तरह के रिश्ते में मौजूद होनी चाहिए। और ऐसा ही भगवान के साथ भी है। सभी प्राचीन लोग, चाहे वे ग्रीको-रोमन, यहूदी या ईसाई हों, जानते हैं कि हम भगवान या देवताओं द्वारा हमें दिए गए उपहारों का कभी भी भुगतान नहीं कर सकते।

लेकिन यह हमें उन्हें पूरा सम्मान और पूरी पूजा और सेवा देने के दायित्व से मुक्त नहीं करता है। इसलिए, अभी-अभी प्रशंसा के बलिदान का आह्वान करने के बाद, परमेश्वर की गवाही देते रहने और इस तरह अविश्वासी दुनिया में परमेश्वर के सम्मान को बढ़ाने के लिए, उसके ठीक बाद, लेखक कहता है, हमें भलाई करना और जो हमारे पास है उसे बाँटना नहीं भूलना चाहिए, क्योंकि इस तरह के बलिदान परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं, जैसा कि इब्रानियों 13.16 में बताया गया है। हम परमेश्वर को कुछ नहीं दे सकते क्योंकि उसे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है, लेकिन परमेश्वर को यह अच्छा लगता है जब हम एक-दूसरे को देते हैं क्योंकि किसी की ज़रूरत होती है। और इसलिए, हम परमेश्वर को वापस देने के रूप में, उसकी उदारता के लिए एक तरह के छोटे से बदले के रूप में, एक-दूसरे को दे सकते हैं।

हम मदद कर सकते हैं। हम किसी भी बहन या भाई की ज़रूरत के हिसाब से भौतिक संसाधन दे सकते हैं। और परमेश्वर इसे अपने लिए एक उपहार मानता है, एक ऐसा बलिदान जो उसकी नज़र में प्रसन्न होगा।

इब्रानियों 6:10 में पहले लेखक कहता है, परमेश्वर अन्यायी नहीं है कि तुम्हारे काम और उस प्रेम को अनदेखा करे जो तुमने संतों की सेवा में उसके नाम के लिए दिखाया है, जैसा कि तुम अभी भी करते हो। यहाँ, लेखक इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित कर रहा है कि ईसाई एक दूसरे के लिए क्या करते हैं क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के प्रेम का अनुभव किया है, और क्योंकि परमेश्वर का प्रेम उन्हें प्रेरित करता है, या मसीह का प्रेम उन्हें प्रेरित करता है, परमेश्वर जानता है कि इस तरह की पारस्परिक सहायता और समर्थन परमेश्वर को एक उपहार के रूप में दिया जाता है। और वह एक अन्यायी परमेश्वर नहीं है।

जैसा कि मसीही एक दूसरे में निवेश करते रहते हैं, खासकर इस कठिन परिस्थिति में, जैसा कि हमने वर्णन किया है, जिसका सामना इब्रानियों के श्रोता करते हैं, परमेश्वर इसे एक आभारी प्रतिफल के रूप में गिनेगा और इसलिए उन ग्राहकों पर अनुग्रह करना जारी रखेगा जिन्होंने खुद

को महान दिखाया है, जो जानते हैं कि उपहार का मूल्य कैसे निर्धारित किया जाए। और फिर इब्रानियों 10.19-24 में, चूँकि हमारे पास साहस है, चूँकि हमें यीशु के लहू द्वारा पवित्र स्थानों में प्रवेश करने के लिए आत्मविश्वास का यह उपहार मिला है, जहाँ कोई भी लेवी पुजारी पहले नहीं जा सका है, आइए हम एक दूसरे पर ध्यान दें और प्रेम और अच्छे कार्यों की बाढ़ लाएँ। आप जानते हैं, फिर से, परमेश्वर से ऐसे अभूतपूर्व उपहारों की प्राप्ति हमें प्रेरित करती है कि हम वैसे ही सेवा करें जैसे परमेश्वर चाहते हैं कि हम करें, जो, जैसा कि होता है, परमेश्वर के प्रत्यक्ष लाभ के लिए सेवा नहीं कर रहा है, बल्कि परमेश्वर के बाकी बच्चों को लाभ पहुँचाने के लिए परमेश्वर चाहते हैं कि हम दें।

इस प्रकार, ईसाई समुदाय का निर्माण करते रहें और हर उस बहन या भाई को सशक्त बनाएँ जिसे समाज अपनी वफ़ादारी में दृढ़ रहने के लिए लक्षित कर रहा हो। अब, इब्रानियों का एक और पहलू है। एक ओर, वह परमेश्वर के प्रति आदर, वफ़ादार बने रहने और सेवा करने की पूर्ण-रक्त वाली, आभारी प्रतिक्रिया का आग्रह करता है।

दूसरी ओर, उन्होंने ईसाइयों को कृतघ्नता के विरुद्ध चेतावनी देते हुए, बहुत अच्छी तरह से डंडा चलाया है। और इब्रानियों का एक बड़ा हिस्सा, इब्रानियों 3:7-4:11, 6:4-8, 10:26-31, वास्तव में कृतघ्नता और कृतघ्नता के खतरे, कृतघ्नता की कुरूपता के विषय का उपयोग एक आभारी प्रतिक्रिया को प्रेरित करने के लिए करता है, जैसा कि हम बात कर रहे हैं। इसलिए, इब्रानियों 3:7-4.11 से शुरू करते हुए, लेखक श्रोताओं से आग्रह कर रहा है कि वे प्राप्त उपहारों को महत्व देते रहें, वफ़ादारी दिखाते रहें, और ईश्वर के उपहारों पर भरोसा करते रहें और आगे बढ़ते रहें।

और वह ऐसे लोगों का उदाहरण देखता है जो ऐसा करने में विफल रहे। आप निःसंदेह निर्गमन पीढ़ी की कहानी से परिचित होंगे, जिनके लिए परमेश्वर ने मिस्र पर एक के बाद एक विपत्तियाँ भेजीं, अंततः उन्हें मुक्ति दिलाई, और मूसा के माध्यम से उन्हें मिस्र की गुलामी से बाहर निकालकर उस वादे के देश की ओर ले गया जिसके बारे में परमेश्वर ने कहा था कि वह उन्हें देगा। और परमेश्वर ने रास्ते में मुक्ति के कुछ बहुत ही प्रभावशाली चमत्कार दिखाए, जैसे कि लाल सागर को दो भागों में बाँटना ताकि वे सूखी भूमि पर चल सकें।

और अगर यह काफी नहीं था, तो अपने विरोधियों पर समुद्र को गिरा देना, रेगिस्तान के बीच में मन्ना और बटेर और पानी की आपूर्ति करना, और उपहार के बाद उपहार की बरसात करना, इस पीढ़ी पर समय पर मदद के बाद समय पर मदद करना। और क्या होता है? वे वादा किए गए देश की दहलीज पर पहुँचते हैं, और वे कुछ लोगों को भेजते हैं, प्रत्येक जनजाति का एक प्रतिनिधि, यह पता लगाने के लिए कि इस भूमि को लेने के लिए क्या करना होगा। और इन स्काउट्स की अधिकांश रिपोर्ट की रिपोर्ट, मुझे लगता है कि कनानी लोग उन्हें जासूस कहेंगे, यह होगी, इस भूमि को लेने का कोई तरीका नहीं है।

नहीं, नहीं। ये चारदीवारी वाले शहर हैं और अच्छी तरह से प्रशिक्षित, भारी हथियारों से लैस सैनिक हैं। हम यह ज़मीन नहीं ले रहे हैं।

तो, इस रिपोर्ट का नतीजा यह है कि लोगों का मानना है कि भगवान ने उनसे झूठ बोला है। लोगों ने अपने ईश्वरीय उपकारकर्ता पर भरोसा करना बंद कर दिया है। वे मूल रूप से कहते हैं कि हम उस दिशा में आगे नहीं बढ़ना चाहते जिसका वादा भगवान ने हमें दिया था क्योंकि स्पष्ट रूप से इसकी कीमत बहुत अधिक है।

और ऐसा लगता है कि इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि वह हमारे लिए कुछ कर पाएगा। इसलिए, हम एक नया नेता चुनने जा रहे हैं और मिस्र वापस जा रहे हैं। और कम से कम वहाँ हमें पता होगा कि हमारा अगला भोजन कहाँ से आएगा।

खैर, संख्या 14 में परमेश्वर की प्रतिक्रिया स्पष्ट रूप से अपमानित उपकारकर्ता की प्रतिक्रिया को दर्शाती है। संख्या 14 में परमेश्वर को पता है कि उसने कितनी बार इन लोगों को दिखाया कि वह उन्हें बचा सकता है और उसने उनके प्रति अपनी सद्भावना, अपने अनुग्रह के कितने संकेत दिए हैं। और अब वह क्रोधित है क्योंकि उन्होंने फैसला किया है कि उस पर भरोसा नहीं किया जा सकता।

और इसलिए, वे न केवल उस पर भरोसा करने जा रहे हैं, बल्कि उसकी आज्ञा मानने भी नहीं जा रहे हैं। वे कनानियों के खिलाफ़ कदम नहीं उठाने जा रहे हैं। वे अपने भविष्य को सुरक्षित करने के लिए एक बिल्कुल अलग दृष्टिकोण अपनाने जा रहे हैं।

इसलिए, परमेश्वर की प्रतिक्रिया क्रोध की प्रतिक्रिया है, अपमानित उपकारकर्ता का क्रोध। और इसका परिणाम यह हुआ कि उस पूरी पीढ़ी को बहिष्कृत कर दिया गया, कालेब और यहोशू को छोड़कर, जो केवल दो जासूस थे जिन्होंने कहा, चलो, परमेश्वर हमारे पक्ष में है, हम उसे ले सकते हैं। उस पूरी पीढ़ी को वादा किए गए अनुग्रह से बहिष्कृत कर दिया गया।

वे मेरे विश्राम में प्रवेश नहीं करेंगे, जैसा कि मैंने अपने क्रोध में शपथ ली थी। लेखक फिर अपने अभिभाषकों के साथ एक स्पष्ट संबंध बनाता है। हम उनके जैसे नहीं बनना चाहते।

हमने भी अद्भुत ईश्वरीय कृपा का अनुभव किया है। हमने पवित्र आत्मा के उपहारों का अनुभव किया है। हमने अपने बीच ईश्वर की शक्ति को काम करते हुए देखा है।

और हमने परमेश्वर के अच्छे वचन सुने हैं जो कहते हैं, मैं तुम्हें यीशु के द्वारा प्रतिज्ञा की भूमि पर, एक शाश्वत मातृभूमि, एक स्थायी शहर में ले जा रहा हूँ। हम निर्गमन पीढ़ी की तरह नहीं बनना चाहते हैं और उस प्रतिज्ञा में प्रवेश करने की दहलीज पर, अपने उपकारकर्ता से यह कहकर ठोकर खा जाते हैं कि हमें आप पर भरोसा नहीं है। हमें लगता है कि विरोध वास्तव में बहुत कठिन है।

और इसलिए, हम हार मानने जा रहे हैं। इसी तरह, लेखक इस विषय पर वापस आता है, कृपया इस पत्र में कम से कम दो अन्य अवसरों पर इतने शक्तिशाली परोपकारी के प्रति कृतघ्नता न दिखाएँ। इब्रानियों 10:26 से 31 में, हम पढ़ते हैं कि यदि हम सत्य का ज्ञान प्राप्त करने के बाद जानबूझकर पाप करते हैं, तो पापों के लिए कोई बलिदान नहीं बचा है, लेकिन केवल न्याय की एक भयावह संभावना और एक आग है जो विपरीत को भस्म करने के लिए उत्सुक है।

जो कोई मूसा के कानून को दरकिनार करता है, उसे दो या तीन गवाहों की गवाही पर बिना दया के मार दिया जाता है। आपको क्या लगता है कि वह व्यक्ति कितनी अधिक सज़ा का हकदार होगा जो परमेश्वर के बेटे को रौंदता है, जो उस खून को सामान्य मानता है जिसके द्वारा उसे पवित्र किया गया था, और जो अनुग्रह की आत्मा का अपमान करता है? इस अंश में, हम कुछ बातें देखते हैं। मेरा मतलब है, सबसे पहले, यहाँ जानबूझकर पाप करना उपदेश के संदर्भ में नहीं है, बस कोई भी पुराना पाप है जो हम जानबूझकर कर सकते हैं।

उसके मन में एक ऐसा पाप है जो बहुत ही खास है। उसने अभी दो आयतों पहले ही इस बारे में बात की है। वे लोग जो एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना छोड़ चुके हैं।

वे लोग जो अपने पड़ोसी की पुष्टि की कमी के कारण, इसे बेहतर तरीके से कहें तो, अपने पड़ोसियों द्वारा उन पर थोपी गई शर्म के कारण, यह निर्णय लेते हैं कि दुनिया की स्वीकृति और मित्रता ईश्वर की स्वीकृति और मित्रता और वादों से अधिक मूल्यवान है। लेखक कहते हैं कि यह एक जानबूझकर किया गया पाप है। आप सिर्फ एक बुद्धिमानी भरा निर्णय नहीं ले रहे हैं।

आप भगवान से कह रहे हैं, आपके उपहार और आपके वादे उस कीमत के लायक नहीं हैं जो उन्हें पूरा करने के लिए खर्च की जाती है। मैं आगे नहीं बढ़ रहा हूँ। मैं उन लोगों से प्रतिरोध के खिलाफ़ दबाव बनाना जारी नहीं रख रहा हूँ जो आपको नहीं जानते।

लेखक के अनुसार, यह सिर्फ़ हार मान लेना नहीं है। यह परमेश्वर के पुत्र को कुचलना है। यह यीशु के खून को, जिसने ईसाइयों को पवित्र किया, बेकार समझना है, जैसे कि एक साधारण मनुष्य का खून।

यह उस दिव्य आत्मा का अपमान है जिसने अनुग्रह प्रदान किया। और इस प्रकार, इन छवियों का उपयोग करते हुए, लेखक वास्तव में एक समझदारी भरे निर्णय की तरह लग सकता है। हम इस शहर में ईसाइयों के रूप में अब और अच्छे से नहीं रह पा रहे हैं, और शायद हमने कोई गलती की है।

वह इसे ईसाइयों के ईश्वरीय अनुग्रह के अपने अनुभव के संदर्भ में फिर से परिभाषित कर रहा है। यदि आप अब उससे मुंह मोड़ लेते हैं, तो आप वास्तव में क्या कह रहे हैं? आप कह रहे हैं कि यीशु उसके लिए कष्ट सहने के सम्मान के हकदार नहीं हैं। आप कह रहे हैं कि मेरे लिए बहाया गया उसका खून मेरे लिए उसके लिए कोई खून बहाने के लायक नहीं है या उससे कम है।

आप कह रहे हैं कि जिस तरह से ईश्वर ने आपको अनुग्रहपूर्वक और खुले हाथों से स्वीकार किया है, उसके लिए आप अपमान का बदला लेने के लिए उसके चेहरे पर थप्पड़ मारने को तैयार हैं। तो जाहिर है, इब्रानियों के लेखक ने इन लिपियों का बहुत प्रभावी ढंग से उपयोग किया है ताकि एक ईसाई को अविश्वासी समाज की गोद में वापस आकर अस्थायी राहत पाने के बारे में दो बार सोचना पड़े। यह हमें, निश्चित रूप से, इब्रानियों 6:1 से 8 तक ले आता है, जो कि, जैसा कि मैंने कहा है, संभवतः इब्रानियों में सबसे अधिक काम किया गया और प्रसिद्ध चेतावनी वाला मार्ग है।

यह कुछ हलकों में धार्मिक तूफान केंद्र की तरह है, और हम जल्द ही इस पर आएंगे। इब्रानियों 6:1 से 8 में तर्क-वितर्क का एक बहुत सीधा रास्ता बताया गया है। इब्रानियों 6:1 में, लेखक एक ऐसा मार्ग प्रस्तावित करता है जिसे वह चाहता है कि सभी ईसाई अपनाएँ।

मसीह के मूलभूत सिद्धांतों को पीछे छोड़ते हुए, आइए हम अपनी यात्रा के अंतिम बिंदु तक आगे बढ़ें। याद रखें, जंगल की पीढ़ी ने ऐसा नहीं किया। वे अपनी यात्रा के अंत से पहले ही दहलीज पर रुक गए।

लेखक ईसाइयों के लिए ऐसा नहीं चाहता, इसलिए वह कह रहा है, चलो अंत तक आगे बढ़ते रहें। पीछे हटने, दूर जाने या चर्च को त्यागने के बजाय प्रतिबद्धता के मार्ग पर आगे बढ़ते रहें। और वह विपरीत तर्क के साथ कार्रवाई के लिए उस आह्वान का समर्थन करता है।

अगर हम आगे नहीं बढ़ते तो इसका क्या मतलब होगा? अगर हम ईसाई धर्म में दृढ़ नहीं रहते तो इसका क्या मतलब होगा? और इसलिए, हम 6: 4 से 8 में पढ़ते हैं, उन लोगों को पश्चाताप के शुरुआती बिंदु पर एक बार फिर से लाना असंभव है जो निर्णायक रूप से प्रबुद्ध हो चुके हैं, जिन्होंने स्वर्गीय उपहार का स्वाद चखा है और पवित्र आत्मा में साझा किया है, और जिन्होंने ईश्वर के अच्छे वचन और आने वाले युग की शक्तियों का स्वाद चखा है, और जो भटक जाते हैं क्योंकि वे मसीह को फिर से क्रूस पर चढ़ाते हैं ताकि वे खुद को नुकसान पहुँचा सकें और उसे सार्वजनिक रूप से अपमानित कर सकें। अब, हमें ध्यान देना चाहिए कि लेखक इन काल्पनिक व्यक्तियों को उन लोगों के संदर्भ में प्रस्तुत नहीं कर रहा है जो बचाए गए हैं या जो बचाए जाने का दिखावा करते हैं लेकिन वास्तव में बचाए नहीं गए हैं या ऐसा कुछ भी नहीं है। मैंने कई लेख पढ़े हैं जहाँ यह सवाल है।

क्या लेखक उन लोगों का वर्णन कर रहा है जो बचाए गए हैं? मैं यहाँ सीधे-सीधे कह दूँ। इब्रानियों के लेखक ने उपदेश में किसी भी बिंदु पर उद्धार को वर्तमान वास्तविकता के रूप में नहीं बताया है। इफिसियों के विपरीत, इब्रानियों के लेखक ने केवल भविष्य के संदर्भ में उद्धार के बारे में बात की है।

स्वर्गदूत उन लोगों की ओर से भेजे गए सेवा करने वाले आत्मा हैं जो 1:14 या संभवतः 1:13 में उद्धार प्राप्त करने वाले हैं। बाद में, अध्याय 9 के अंत में, यीशु, जो पापों से निपटने के लिए एक बार आए थे, उन लोगों के उद्धार के लिए दूसरी बार प्रकट होंगे जो उत्सुकता से उनका इंतजार कर रहे हैं। इसलिए, यह सब बाहर फेंकने के लिए, मैं अलग-अलग शास्त्र लेखकों को इन अवधारणाओं को अपने स्वयं के शब्दों में प्रस्तुत करने देना चाहूँगा। और इसलिए 6:4-5 में व्यक्तियों के बारे में बात करना भी ऐसे लोगों के रूप में है जो बचाए गए हैं या नहीं बचाए गए हैं या बचाए गए दिखते हैं लेकिन बचाए नहीं गए हैं, ऐसी भाषा का उपयोग करना है जिसका उपयोग इब्रानियों के लेखक कभी नहीं करते हैं।

जहाँ तक यीशु का सवाल है, वे ऐसे लोग हैं जो उद्धार के मार्ग पर रुक जाते हैं। वे ऐसे लोग हैं जो परमेश्वर द्वारा उनके लिए तैयार किए गए उद्धार को त्याग देते हैं क्योंकि वे यीशु के चेहरे पर

तमाचा मारते हैं। वह उन्हें किस तरह से प्रस्तुत करता है? वह उन्हें ईश्वरीय उपहारों और कृपाओं की वर्षा के प्राप्तकर्ता के रूप में प्रस्तुत करता है।

वह इन लोगों को दिखाता है कि असफल होना, माफ़ करना, और कृतज्ञतापूर्ण प्रतिक्रिया देने में विफल होना कितना बुरा होगा। ध्यान दें कि अंग्रेज़ी में, मुझे लगता है, यह ग्रीक भाषा की तरह ही इसका प्रतिनिधित्व करता है। लेकिन ग्रीक में, इन लोगों को भगवान से उपहार के बाद उपहार प्राप्त करने वाले दर्शकों के रूप में वर्णित करने वाले एक के बाद एक कृदंत खंड हैं।

ये कोई साधारण उपहार नहीं हैं, बल्कि आने वाले युग की शक्तियों का पूर्वानुभव और पवित्र आत्मा में हिस्सा और जो आपके पास है, उसका अनुभव है। और ये लोग पलटकर यीशु को सार्वजनिक रूप से अपमानित करते हैं, उन्हें फिर से क्रूस पर चढ़ाते हैं, अपने पड़ोसियों से कहते हुए कि, तुम सही हो, तुम सही हो। वह ईश्वर का पुत्र नहीं है जिसके लिए मरना उचित है।

वह सिर्फ़ एक अपराधी है जो क्रूस पर मरा और मुझसे इससे ज़्यादा कुछ पाने का हकदार नहीं है। ऐसी प्रतिक्रिया कितनी भद्दी होगी। इसलिए, वह श्रोताओं पर यह प्रभाव डालता है कि अगर हम अपनी यात्रा के अंत तक आगे बढ़ने के अलावा कुछ भी करते हैं, जैसा कि वह 6:1 में कहता है, तो हम अपने उपकारकर्ता पर सार्वजनिक अपमान ला रहे हैं और उसके महंगे उपहारों के लिए सार्वजनिक अवमानना दिखा रहे हैं।

इसलिए, यह अकल्पनीय होना चाहिए कि इतने उपहार और इतनी बड़ी कीमत चुकाने के बाद, दाता, यीशु, जो हमारी ओर से क्रूस पर चढ़ाए गए थे, के दृष्टिकोण से, वफादारी और विश्वास में बने न रहना। यहाँ मूल सांस्कृतिक धारणा, जो इब्रानियों के लेखक को उसी तरह से रेखांकित करती है, जैसे कि सेनेका या डायोक्रेटस के लेखन में होती है, यह है कि जो लोग अपने उपकारकर्ताओं का सम्मान करते हैं, वे सभी लोग उपकार के पात्र माने जाते हैं। लेकिन जो लोग अपने उपकारकर्ताओं का अपमान करते हैं, उन्हें कोई भी उपकार का पात्र नहीं मानेगा।

इसलिए, लेखक का दावा है कि ऐसे लोगों को शुरुआती बिंदु पर वापस लाना असंभव है। आप ईश्वर से इतने सारे उपहारों, उनके इतने अचूक उपकारों का आनंद लेने के बाद एक नई शुरुआत के लिए फिर से कैसे संपर्क करेंगे? उसके बाद, उसने अपने बेटे पर थूका, जैसे कि वे लोग कहते हैं कि हमारे पड़ोसी की दोस्ती ईश्वर की दोस्ती से बेहतर है। उससे उपकार का बदला कैसे मिल सकता है? फिर लेखक 6, 7 से 8 में अपने आह्वान का समर्थन करने के लिए आगे बढ़ता है और कृषि से सादृश्य से तर्क के साथ इसके विपरीत तर्क का समर्थन करता है।

और इसलिए, हम पढ़ते हैं, जो ज़मीन उस पर लगातार गिरने वाली बारिश को पीती है और उन लोगों के लिए उपयोगी वनस्पतियाँ उगाती है जिनके लिए ज़मीन पर खेती की जा रही है, उसे ईश्वर से आशीर्वाद मिलता है। लेकिन अगर उसमें काँटे और ऊँटकटारे उगते हैं, तो वह बेकार साबित होती है और शापित होने के कगार पर होती है। उसका अंत जलकर राख हो जाना है।

अब, बेशक, इन आयतों में कुछ स्पष्ट पुराने नियम की प्रतिध्वनियाँ हैं। उदाहरण के लिए, काँटे और ऊँटकटारे, एक अभिशाप के संबंध में, उत्पत्ति 3:17 से 18 की याद दिलाते हैं, जहाँ आदम

और हव्वा के आदर्श अपराध के बाद, ज़मीन उनके पाप के कारण शापित है और काँटे और ऊँटकटारे उगाएगी और केवल बड़ी कठिनाई से फलदायी होगी। और वाचा की भाषा के संदर्भ में आशीर्वाद और अभिशाप का विरोध, बेशक, वास्तव में व्यवस्थाविवरण को समग्र रूप से याद दिलाता है, लेकिन विशेष रूप से, व्यवस्थाविवरण 11:26 से 28 को।

लेकिन हमें यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि कृषि से जुड़ी इस भाषा की पहली बार सुनने वालों की दुनिया में अलग ही तरह की प्रतिध्वनि है। पारस्परिकता के सामाजिक संदर्भ के साथ प्रतिध्वनि। कृषि अक्सर अच्छा देने और अच्छा लौटाने के लिए एक सादृश्य के लिए जाने वाली जगह है।

इस प्रकार, सेनेका में, हम कई उदाहरण पढ़ते हैं। हम उन लोगों को नहीं चुनते जो हमारे उपहार प्राप्त करने के योग्य हैं। वैसे, यह उनके द्वारा यह समझाने के संदर्भ में है कि उपहार अक्सर कृतज्ञता का उचित फल क्यों नहीं देते हैं जिसकी हम अपेक्षा करते हैं।

ऐसा इसलिए है क्योंकि हम उन लोगों को नहीं चुनते जो हमारे उपहार पाने के योग्य हैं। हम घिसी-पिटी और अनुत्पादक मिट्टी में बीज नहीं बोते, बल्कि हम बिना किसी भेदभाव के लाभ देते हैं या यूँ कहें कि फेंक देते हैं। इसलिए, हमें वह मिलता है जिसके हम हकदार हैं।

इस पाठ में आगे, हमें उन लोगों को चुनने में सावधानी बरतनी चाहिए जिन्हें हम लाभ देना चाहते हैं क्योंकि किसान भी अपने बीजों को रेत में नहीं डालता। और फिर, जब वह देने वालों से संभावित प्राप्तकर्ता पर जोखिम लेने का आग्रह करता है, सबूत का इंतजार न करने के लिए, बल्कि बस कुछ अच्छे संकेतों को देखने और जोखिम लेने के लिए, वह लिखता है, हम कभी भी इस बात की पूर्ण निश्चितता का इंतजार नहीं करते हैं कि प्राप्तकर्ता आभारी साबित होगा या नहीं क्योंकि सत्य की खोज कठिन है। लेकिन हम उस मार्ग का अनुसरण करते हैं जो संभावित सत्य दिखाता है।

जीवन का सारा काम इसी तरह से आगे बढ़ता है। हम इसी तरह से बोते हैं। कौन बोने वाले को फसल का वादा करेगा? और एक दाता को ऐसे व्यक्ति को भी देते रहने के लिए प्रेरित करने के संदर्भ में जिसने अभी तक खुद को वास्तव में आभारी नहीं दिखाया है, वह लिखते हैं, किसान अपना सब कुछ खो देगा जो उसके पास है, माफ कीजिए, उसने जो कुछ भी बोया है, अगर वह बीज बोने के साथ ही अपना श्रम समाप्त कर देता है।

बहुत सावधानी के बाद ही फसल की पैदावार होती है। जिस चीज को पहले दिन से लेकर आखिरी दिन तक लगातार खेती के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाता, वह कभी फल देने की अवस्था तक नहीं पहुँच पाती। लाभ के मामले में भी यही नियम लागू होता है।

यहूदी ग्रंथों में भी ऐसी ही भावनाएँ पाई जा सकती हैं, जैसे कि छद्म-सुविधाओं के वाक्य। किसी बुरे व्यक्ति का भला न करना, समुद्र में बीज बोने जैसा है। यहाँ तक कि यशायाह 5:1 से 7 में दाख की बारी के गीत तक पहुँचने पर भी, हम इनमें से बहुत सी गतिशीलता को काम करते हुए देखते हैं।

अंगूर का बाग लगाने वाले की शिकायत यह है कि उसकी सारी देखभाल के बाद, बेलों को लगाने, उन्हें सजाने, बाड़ बनाने, मीनार बनाने और खेती करने के बाद भी, वह उपयोगी और सुंदर अंगूरों की जगह खट्टे अंगूर पैदा करता है। और परमेश्वर कहता है कि इस्राएल ऐसा ही था। मैंने सब कुछ दिया, मैंने इस्राएल पर इतनी सारी देखभाल लुटाई। मुझे क्या मिला? न्याय के बजाय, एक चीख-पुकार।

तो, फिर इब्रानियों 6:7 से 8 पर लौटते हुए, हम इस सादृश्य में वास्तव में इब्रानियों 6, 4 से 6 का एक प्रकार का पुनर्कथन देखते हैं। ये प्राप्तकर्ता, क्षमा करें, ये ईसाई आशीर्वाद की एक के बाद एक वर्षा के प्राप्तकर्ता रहे हैं। परमेश्वर का अनुग्रह का शासन उन पर बार-बार बरसा है। अब, यदि वे उन लोगों के लिए उपयोगी वनस्पति उगाते हैं जिनके लिए परमेश्वर उन्हें उगा रहा था, तो वे धन्य होंगे।

लेकिन अगर वे सिर्फ काँटे और ऊँटकटारे ही उगाते हैं, ताकि उन्हें लाभ पहुँचाने वाले परमेश्वर के किनारों को चुभें, तो वे सिर्फ शाप की उम्मीद कर सकते हैं। एक दिलचस्प बात यह है कि अगले ही पैराग्राफ में, हम पाते हैं कि जिस तरह का फल हमें उगाना चाहिए, वह वह फल है जो मसीह में हमारे बहनों और भाइयों को लाभ पहुँचाता है, जिससे वे अपने ईश्वरीय संरक्षक के प्रति वफ़ादारी में बने रहने में सक्षम होते हैं। तो, संक्षेप में, इस अंश में तर्क यह है कि सबसे पहले, लेखक तर्क का एक तरीका प्रस्तावित करता है।

आइए अंत तक आगे बढ़ते रहें, परमेश्वर के प्रति अटूट विश्वास, निष्ठा और कृतज्ञता के साथ प्रतिक्रिया करें। 6:4 से 8, क्योंकि हम वास्तव में कुछ और नहीं कर सकते हैं यदि हम, इस बिंदु पर, परमेश्वर से दूर हो जाते हैं और अपने पड़ोसियों, हमारे गैर-ईसाई पड़ोसियों से कहते हैं, आप सही हैं; मसीह की दोस्ती उस कीमत के लायक नहीं है जो मुझे बनाए रखने के लिए चुकानी पड़ती है। तब हमने कुछ ऐसा किया है जो अकथनीय रूप से बदसूरत है और अंत में क्रोध की अपेक्षा के अलावा किसी और चीज के लिए परमेश्वर के अनुग्रह का आदान-प्रदान किया है।

फिर, अगला पैराग्राफ, 6:9 से 12, श्रोताओं को इस बात की पुष्टि करता है कि उन्होंने अब तक अच्छी मिट्टी को प्रतिबिंबित किया है। उन्होंने एक दूसरे के लिए प्रेम दिखाया है और अच्छा किया है। 10, 32 से 34 को याद करें, जब उनके कुछ लोग जेल में थे, तब भी वे उनके पास गए।

उन्होंने उन ईसाइयों को प्रोत्साहन और भौतिक सहायता देने के लिए खुद पर जोखिम उठाने को प्रोत्साहित किया, जिन्हें समाज ने सबसे अधिक शर्मिंदा करने के लिए निशाना बनाया था। इसलिए यहाँ दर्शकों के सामने सवाल यह है कि वे किस तरह के लाभार्थी बने रहेंगे? नीच या सम्माननीय? कृतघ्न या विश्वसनीय? क्या वे उपजाऊ मिट्टी साबित होंगे और इस तरह भगवान के निरंतर अनुग्रह के उपयुक्त प्राप्तकर्ता के रूप में आने वाले महान उपहार प्राप्त करेंगे? या वे अंत में खराब मिट्टी साबित होंगे, जो एक अप्रिय और यहां तक कि चोट पहुंचाने वाली प्रतिक्रिया को जन्म देती है? अब, मैंने कहा कि यह अंश धर्मशास्त्रीय बहस के लिए एक तरह का केंद्र है, विशेष रूप से अक्षम्य पाप और शाश्वत सुरक्षा के विषयों के आसपास। आप जिस भी तरह से जाएं, आप वास्तव में इस पाठ के साथ संघर्ष कर सकते हैं।

इसलिए, बहुत से लेखों और टिप्पणियों में, मुझे लगता है कि यह वह जगह है जहाँ सवाल केंद्रित है। क्या पाठ वास्तव में अक्षम्य पाप की पहचान करता है, वह कार्य जिसके बाद परमेश्वर के साथ कोई भविष्य नहीं है? दूसरी ओर, जो लोग शाश्वत सुरक्षा को मानते हैं, उनके लिए सवाल यह है कि हम इस पाठ को अपने सिद्धांत के साथ कैसे फिट करें क्योंकि यह सुझाव देता है कि एक व्यक्ति अपना उद्धार खो सकता है? अब, हम पहले से ही इसके अंतिम भाग को संबोधित कर चुके हैं क्योंकि इब्रानियों के लेखक के सामने अपने उद्धार को खोने का सवाल उठाने का मतलब है कि आप इफिसियों द्वारा उद्धार की भाषा का उपयोग करने जा रहे हैं और जोर देकर कहते हैं कि इब्रानियों का लेखक उन शब्दों पर बात करता है जबकि वह स्पष्ट रूप से ऐसा नहीं करता है। फिर भी, मुझे यहाँ सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के बारे में जो बात वास्तव में मददगार लगी वह यह है कि यह हमें यह कहने के लिए प्रेरित करती है कि, अरे, दोनों प्रश्न गलत हैं।

दोनों ही चिंताएँ अनुग्रह के लोकाचार का उल्लंघन कर रही हैं। हो सकता है कि आपने व्याख्यान संख्या तीन से पहले ही समझ लिया हो, लेकिन मैं इस तथ्य को स्पष्ट कर दूँ कि ऐसे परस्पर विरोधी नियम हैं जो देने वालों और प्राप्तकर्ताओं को नियंत्रित करते हैं। सेनेका इस विरोधाभास में लगभग प्रसन्न होते हैं कि देने वाले को इस तरह से सोचना चाहिए, लेकिन प्राप्तकर्ता को पूरी तरह से विपरीत तरीके से सोचना चाहिए।

इसलिए, उदाहरण के लिए, एक, यानी देने वाले को सिखाया जाना चाहिए कि वह दी गई राशि का कोई रिकॉर्ड न रखे। दूसरे, यानी प्राप्तकर्ता को, दी गई राशि से ज़्यादा के लिए ऋणी महसूस करना चाहिए। लाभ के मामले में, वह लिखते हैं, यह संबंधित दोनों के लिए एक बाध्यकारी नियम है।

एक, देने वाले को तुरंत भूल जाना चाहिए कि यह दिया गया था। दूसरे, पाने वाले को कभी नहीं भूलना चाहिए कि यह प्राप्त हुआ था। वे कहते हैं, लाभ देने वाले को अपनी जुबान बंद रखनी चाहिए।

इसलिए, एक दाता के रूप में, मुझे कभी नहीं कहना चाहिए, हाँ, मैंने फ़लों की मदद की। दाता की उदारता की गवाही देने के लिए प्राप्तकर्ता को बोलने दें। अपनी पुस्तक के अंत में, वे लिखते हैं, आप जानते हैं, जब कोई प्राप्तकर्ता बदले में कुछ पाने के लिए किसी अवसर की तलाश करता है, लेकिन दाता के अत्यधिक बेहतर संसाधनों के कारण अभी तक वह अवसर नहीं पाता है, तो दाता को यह विचार करना चाहिए कि उसने अपने लाभ के लिए पहले ही प्रतिफल प्राप्त कर लिया है क्योंकि ग्राहक बहुत सतर्क रहा है, बस असफल रहा है।

जबकि दूसरे, यानी प्राप्तकर्ता को पता होना चाहिए कि उसने इसे वापस नहीं किया है। देने वाले को दूसरे को छोड़ देना चाहिए जबकि प्राप्तकर्ता को खुद को बंधा हुआ महसूस करना चाहिए। अब, इस तरह के माहौल में, यह स्पष्ट है कि आप वास्तव में दूसरे पक्ष को बांधकर नहीं रख सकते।

द देने वाले के लिए यह मान लेना कि उसे क्या करना चाहिए, कुरूपता की ओर ले जाएगा। खैर, मुझे वास्तव में यह लाभ वापस करने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि देने वाला, अगर वह महान होने

जा रहा है, तो उसे वैसे भी इसे याद नहीं रखना चाहिए। जैसे ही आप इसके बारे में सोचते हैं, आपने रिश्ते की पूरी गुणवत्ता को खराब कर दिया है।

इसलिए, आंतरिक सुरक्षा के बारे में बहुत सारे तर्कों के साथ ऐसा ही है, उदाहरण के लिए, जैसे ही हम कहते हैं, ठीक है, आप जानते हैं, हम ऐसा कुछ नहीं कर सकते हैं जिससे भगवान जैसे उदार दाता को वह वापस मिल जाए जो उसने दिया है। ऐसा करके, हमने एक बहुत ही गैर-पहली सदी की बात की है, कुछ ऐसा जो किसी भी पहली सदी के व्यक्ति के लिए अकल्पनीय होगा। हमने कहा है, मैं, प्राप्तकर्ता, यह अनुमान लगाने जा रहा हूँ कि दाता को क्या करना चाहिए।

पहली सदी में अनुग्रह प्राप्त करने वाला व्यक्ति जानता है कि देने वाले को क्या करना चाहिए, लेकिन पहली सदी में अनुग्रह प्राप्त करने वाला व्यक्ति जानता है कि उसे अपने काम में ध्यान रखना चाहिए कि वह अच्छी तरह से और शालीनता से जवाब दे और वह अनुग्रह का अनुमान नहीं लगाएगा। इसलिए, वहाँ एक बड़ा खतरा है। लेकिन दूसरी तरफ एक और खतरा है, अक्षम्य पाप का पक्ष, और इस अंश का उपयोग यह कहने के लिए किया जाता है कि, हाँ, यह वहाँ है, और हमें इसे न करने के लिए सावधान रहना चाहिए क्योंकि ऐसा कुछ है जो हम कर सकते हैं जिससे परमेश्वर हमें कभी क्षमा नहीं करेगा।

यह मान लेना कि वास्तव में, देने वाला हमेशा देने के लिए स्वतंत्र नहीं होता है और देने वाले की उदारता हमेशा ग्राहक की कृतज्ञता की कमी को मात दे सकती है। सेनेका की बात पर वापस आते हुए, एक आखिरी बार, मैं वादा करता हूँ, वह देने वालों को यह सलाह देता है, अर्थात् देवताओं का अनुकरण करें। बेशक, हमें ज्यादातर समय सावधान रहना चाहिए और उन लोगों को देना चाहिए जिन्हें हम पुण्यवान जानते हैं, लेकिन यह सब भगवान ही हमें सिखाते हैं कि कैसे देना है।

वे बिना किसी विचार के देते हैं, यहाँ तक कि देने वाले के गुण, क्षमा करें, प्राप्तकर्ता के गुण के बारे में भी नहीं सोचते। उनका देना इतना परिपूर्ण, इतना अप्रतिबंधित है। इसलिए, जबकि उपकार प्राप्त करने वालों को सिखाया जाता है कि वे कृतज्ञता लौटाने में कभी असफल न हों, क्योंकि कृतघ्नता से किसी को भविष्य के सभी उपकारों से वंचित किया जाना चाहिए, देने वालों को अलग तरह से सोचना सिखाया जाता है।

इसलिए, सेनेका लिखते हैं, हालांकि हमें उन लोगों को प्राथमिकता के आधार पर लाभ प्रदान करने में सावधानी बरतनी चाहिए जो कृतज्ञता के साथ प्रतिक्रिया करने की संभावना रखते हैं, कुछ लाभ ऐसे हैं जो हमें देने चाहिए भले ही हम उनसे खराब परिणाम की उम्मीद करें, और हमें उन लोगों को लाभ प्रदान करना चाहिए जिनके बारे में हम न केवल सोचते हैं कि वे कृतघ्न होंगे बल्कि वे कृतघ्न के रूप में जाने जाते हैं। फलां व्यक्ति ने मेरा आभार नहीं माना है। मुझे क्या करना चाहिए? सेनेका कहते हैं, जैसा देवता करते हैं वैसे ही करो।

वे उन लोगों को लाभ देना शुरू कर देते हैं जो उन्हें नहीं जानते और उन लोगों को देना जारी रखते हैं जो कृतघ्न हैं। आइए हम उनका अनुकरण करें। आइए हम दें, भले ही हमारे द्वारा दिए

गए कई उपहार व्यर्थ हो गए हों, आइए हम उन लोगों को भी दें जिनके हाथों हमें नुकसान उठाना पड़ा है।

यदि कोई व्यक्ति कृतघ्न है, तो भी मैं उस व्यक्ति को दूसरा लाभ दूंगा और जैसे एक अच्छा किसान देखभाल और खेती करके भूमि की बंजरता को दूर करता है, वैसे ही मैं विजयी होऊंगा। लाभ देकर उसे खो देना किसी नेक आत्मा का प्रमाण नहीं है। नेक आत्मा का प्रमाण है खोना और फिर भी देना।

अब, जैसा कि मैंने पहले कहा, देने वाले और पाने वाले इस संवाद के दोनों पक्षों को जानते हैं। वे दो बहुत अलग दृष्टिकोणों में शामिल हैं, लेकिन अधिकांश भाग के लिए, वे इस बात का सम्मान करने में सक्षम प्रतीत होते हैं कि किसी विशेष मामले में कौन सा दृष्टिकोण उन पर लागू होना चाहिए। पाने वाला इस तथ्य पर विश्वास नहीं करता कि देने वालों को किसी भी तरह से उदार होना चाहिए।

देने वाले इस तथ्य पर भरोसा नहीं करते कि प्राप्तकर्ताओं को निश्चित प्रतिफल देना चाहिए। और इसलिए, मैं सुझाव दूंगा कि ये दोनों धार्मिक स्थितियाँ एक ऐसी सीमा को पार करती हैं जिसे इस पाठ के प्रथम-शताब्दी के श्रोता को पता होगा कि इसे पार नहीं किया जाना चाहिए। अनंत सुरक्षा का सिद्धांत प्राप्तकर्ताओं को, भले ही अनजाने में, यह सिखाकर सीमा को पार कर जाता है कि वे अनुमान लगा लें कि देने वाला क्या करेगा, बजाय इसके कि प्राप्तकर्ताओं को इस बात पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए कि ऐसे अद्भुत उपहारों के लिए उचित प्रतिक्रिया देने के लिए उन्हें क्या करना चाहिए।

अक्षम्य पाप या उद्धार खोने का विचार, इस बात पर भरोसा करके कि देने वाला क्या नहीं करेगा और कई मामलों में, उसके अनुसार बुरी सलाह देकर, सीमा को पार कर जाता है। अंत में, मैं आपको यह बताना चाहूँगा कि नए नियम के लेखकों की दुनिया में एक केंद्रीय, मुख्य मूल्य यह है। अनुग्रह को अनुग्रह का उत्तर देना चाहिए।

अनुग्रह से कृतज्ञता और कृतज्ञतापूर्ण प्रतिक्रिया की ओर अग्रसर होना चाहिए। मेरा मानना है कि यह सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, नए नियम में ईश्वर की कृपा के बारे में घोषणाओं को एक साथ रखने की कुंजी प्रदान करती है और ईश्वर ने नए नियम में निर्देशों के साथ क्या दिया है कि ईसाई को प्रतिक्रिया में, एक अटूट बंधन में कैसे रहना है। कहने का तात्पर्य यह है कि, यदि हम अनुग्रह के नृत्य के संदर्भ में ईश्वर की कृपा को याद करते हैं, तो हम यह दृष्टि प्राप्त करना शुरू कर सकते हैं कि ईश्वर हमें बदलने के लिए कैसे काम करता है।

वह हमें पापियों के रूप में देखता है, लेकिन वह हम पर अपनी कृपा बरसाता है। हमारे लिए यीशु की मध्यस्थता के आधार पर परमेश्वर के अपने बेटे और बेटियों के रूप में मेल-मिलाप, पुनर्स्थापना और यहाँ तक कि परमेश्वर के परिवार में गोद लेना। प्रेम का यह अविश्वसनीय प्रवाह और उदारता का यह अविश्वसनीय प्रदर्शन उस शिष्य के हृदय में बदले में कृतज्ञता और प्रेम जगाता है जो वास्तव में एक ऐसा शिष्य साबित होने जा रहा है जो अनुग्रह के प्रति ग्रहणशील है, जो अनुग्रह को अच्छी तरह से प्राप्त करता है।

और इसलिए, एक शिष्य के रूप में मेरा जीवन अचानक अलग हो गया है क्योंकि प्रेरक शक्ति यह है कि मैं उसके लिए कैसे जीऊँ? मैं परमेश्वर को वह सम्मान कैसे लौटाऊँ जो उसकी उदारता से मेल खाता हो, वह वफ़ादारी जो उसके प्रेम से मेल खाती हो, वह सेवा जो उसके उपहार से मेल खाती हो? अब, बेशक, यह कभी भी बराबर नहीं होगा, लेकिन यही पूरी बात है। मैं अपना पूरा जीवन उसके लिए जीता हूँ क्योंकि, भजन के शब्दों में, इतना अद्भुत, इतना दिव्य प्रेम, मेरे जीवन, मेरी आत्मा, मेरे सब कुछ की माँग करता है। या 2 कुरिन्थियों 5:15 में पॉल के उस पाठ पर वापस लौटें, वह सभी के लिए मरा, मसीह सभी के लिए मरा, ताकि जो जीवित हैं वे अब अपने लिए न जीएँ, बल्कि उसके लिए जीएँ जो उनके लिए मरा और जी उठा।

एक ऐसा पाठ है जो कभी भी रोमियों के मार्ग में नहीं आता। खैर, यह कुछ हद तक संभव नहीं है क्योंकि यह 2 कुरिन्थियों से है, लेकिन मेरा मानना है कि यह पॉलिन धर्मशास्त्र और शिष्यत्व के मार्ग में एक मुख्य मार्ग है। पॉल खुद उस प्रतिक्रिया को जानता है क्योंकि वह गलातियों में लिखता है; अब मैं जीवित नहीं हूँ, बल्कि मसीह मुझमें रहता है।

अब मैं जो शरीर में जी रहा हूँ, वह यह है कि मैं परमेश्वर के पुत्र पर भरोसा करके जी रहा हूँ। और इसलिए, वह समझता है कि परमेश्वर के अनुग्रह का अनुभव, जिसे वह अलग नहीं रखेगा, परमेश्वर के अनुग्रह का अनुभव उस पर कैसे प्रभाव डालता है और उसे कैसे प्रभावित करना चाहिए। वह अब अपने लिए नहीं बल्कि यीशु के लिए जीएगा।

और वह हमें शिष्यों के रूप में चुनौती देता है कि हम अब अपने लिए न जियें बल्कि उसके लिए जियें जो हमारे लिए मरा, खास तौर पर इसलिए क्योंकि वह हमारे लिए मरा। और अनुग्रह की यह वर्षा बदले में एक जीवन का हकदार है।